Vol 5 Issue 7 April 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 7 | April - 2016

Review Of Research

स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओर)

धरवेश कठेरिया[1], शिवांजलि कठेरिया[2], नीरज कुमार सिंह[3], निरंजन कुमार[4], रत्नसेन भारती[5], विनय कुमार यादव[6], लाल सिंह[7], अविनाश त्रिपाठी[8]

[1]सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[2]स्वतंत्र पत्रकार एवं शोध कार्य में संलग्न, जबलपुर, मध्यप्रदेश।

[3]शोध सहायक (परियोजना– आईसीएसएसआर), जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[4]पीएच.डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[5,5,6]एम. फिल. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[6]एम. फिल. शोधार्थी, प्रवासन एवं डायस्पोरा अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[7]विद्यार्थी, एम.ए. जनसंचार, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

सारांश –

स्वच्छ भारत अभियान बहुत ही जोर–शोर से शुरू हुआ जिसमें लोगों ने सफाई करते हुए अपना वीडियो भी सोशल नेटवर्किंग साइट पर शेयर किया। यहां तक कि सांसद और फिल्म अभिनेत्री हेमा मालिनी भी सड़क पर झाड़ू ले के आ गईं। सड़के साफ, नालियां साफ जिधर देखो उधर सफाई ही सफाई। सरकार गांधीजी के माध्यम से इस योजना की सफलता तय करने का प्रयास कर रही है। 95 प्रतिशत हां में से प्राप्त तथ्य यह साबित करते हैं कि सरकार गांधी के सपनों को साकार करने का सशक्त प्रयास कर रही है।

विकल्पों के अन्तर्गत राजनीतिक लाभ 13 प्रतिशत, गांधी के विचारों को अमल करना 27 प्रतिशत, स्वच्छता के प्रति जागरूक करना 33 प्रतिशत और विश्व पटल पर भारत की स्वच्छ छवि का निर्माण 26 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। प्राप्त तथ्य साबित करते हैं कि आम लोगों का जुड़ाव स्वच्छता के प्रति निःस्वार्थ भाव से देखने को मिलता है। वहीं आंकड़ों के अनुसार 81 प्रतिशत लोग इस अभियान से जुड़े हैं। वर्तमान समय की मोदी सरकार के अनुसार साल में देश का प्रत्येक नागरिक कम से कम 100 घंटा इस अभियान के लिए दे। योजनाओं और गांधीजी के स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने के उद्देश्य से इस योजना को लाया गया जिसकी वास्तव में जरूरत जान पड़ती है।

षब्द कुंजी:

माध्यम, स्वच्छता, बीमारी, जागरूकता, अभियान, सेवाग्राम आश्रम, सरकार, गांधी, सपना, गंदगी, नागरिक, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, पर्यावरण।

उपकल्पना:

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से गांधी के सपनों को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं।
- स्वच्छता अभियान से आम आदमी में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है।
- स्वच्छता अभियान के जरिए सरकार राजनीतिक लाभ लेने का प्रयास कर रही है।
- स्वच्छ भारत अभियान आरंभ होने के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है।

उदेद्श्य:

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए कुछ उद्धेश्य तय किए गए हैं जो इस प्रकार हैं–

- स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से सरकार गांधी के विचारों को अपने हितार्थ उपयोग कर रही है का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
- स्वच्छता अभियान से लोग जागरूक हो रहे हैं और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझ रहे हैं का अध्ययन करना।
- स्वच्छ भारत अभियान और सरकार के अंतर्संबंधों का अध्ययन करना।

- स्वच्छ भारत अभियान से जानी–मानी हस्तियों के जुड़ने से सामाजिक जागरूकता के प्रभाव का अध्ययन।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओर)' में अध्ययन के लिए शोध अध्ययन को ध्यान में रखते हुए निम्न पद्धितयों का उपयोग किया गया है–

ध निदर्शन पद्धतिः अध्ययन को स्वरूप देने के लिए उद्देश्यपरक निदर्शन के अन्तर्गत गांधी की कर्मभूमि सेवाग्राम का चयन किया गया। सेवाग्राम आनेवाले देश और विदेशी सैलानियों के साथ–साथ आसापास के रहवासियों का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरणः

प्रश्नावलीः अध्ययन को प्रभावी बनाने के लिए सेवाग्राम आश्रम में आए देश और विदेशी सैलानियों से प्रश्नावली के माध्यम से शोध से जुड़े तथ्यों और गांधीजी के विचारों को जानने का प्रयास किया गया है। तथ्य संकलन के लिए खुली एवं बंद प्रश्नावाली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में विषय से संबंधित सझावों को भी आमंत्रित किया गया है।

अनुसूचीः कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने में भाषा संबंधी समस्या होने के कारण उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहां अनुसूची के रूप में किया गया है।

स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण की गंभीरता को देखते हुए तथ्य संकलन के दौरान प्रतिभागियों के विभिन्न विचार देखने को मिले। इन विचारों से प्राप्त महत्वपूर्ण बिन्दुओं को भी शोध में रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। शोध में स्वच्छता संबंधी विभिन्न विचारों को जहां एक ओर महत्वपूर्ण स्थान मिला है वहीं ऐसे विचारों को भी वरियता दी गई है जो स्वच्छता को अपने जीवन में आत्मसात करते हुए दूसरों को भी इससे अवगत करा रहे हैं। स्वच्छता हमारे जीवन के लिए आवश्यक तत्व के रूप में शामिल है।

प्रस्तावना

भारत की आजादी के प्रमुख सूत्रधार मोहनदास करमचंद गांधीजी ने जब देखा कि लोग अभावों के साथ–साथ गंदगी के साथ जीवन यापन कर रहे हैं, तो उनके अन्तर्मन की चेतना में स्वच्छता के बीज पल्लवन हेतु उन्होंने स्वच्छता अभियान चलाया। गांधीजी स्वच्छता के संदर्भ में कहते है कि– हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाई को न तो जरूरी गुण माना, न ही उसका विकास किया। हमारी इस कमजोरी को मैं एक बड़ा दुर्गुण मानता हूं। इस दुर्गुण का ही नतीजा है कि हम बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। (ग्राम स्वराज्य, संग्राहक हरिप्रसाद व्यास, पृष्ठ संख्या 171) जिससे लोगों में इसके प्रति काफी जागरूकता देखने को मिली। फिर भी इसकी व्यापकता अपेक्षित रूप अख्तियार नहीं कर पाई। उसके बाद बहुत से बुद्धिजीवियों ने इस बात को काफी गंभीरता से लेते हुए इसका प्रचार प्रसार किया। कुछ सफलता भी परिलक्षित हुई पर उतनी न हो पाई, जितनी इसकी जरूरत थी। फिर इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए सरकार ने भी 'निर्मल ग्राम' नाम से योजना की शुरुआत की किन्तु अपेक्षित सफलता हाथ नहीं लगी।

देश की आजादी के 68 साल बाद भी स्वच्छ भारत का सपना, सपना ही रहा है। धरातल पर तो इसने रेंगना भी नहीं सीखा। इधर–उधर गंदगी का अंबार आसानी से दिखाई पड़ जाता है अधिकतर बीमारियों को यही गंदगियां आमंत्रण देने का कार्य भी करती हैं। गांवों में अभी भी शौचालयों की समुचित व्यवस्था न होने से लोग खुले में शौच करने को मजबूर हैं। अपशिष्ट पदार्थ का सही से निस्तारण न होने से गावों में बीमारियों और महामारियों का प्रकोप सिर पर तलवार की भांति लटक रहा है।

भारत के निवर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी ने महात्मा गांधीजी के 145वें जन्मदिन 2 अक्तूबर 2014 को पुनः भारत को स्वच्छ करने का बीड़ा उठाया है, भारत को स्वच्छ करने का लक्ष्य बापू के 150वें जन्मदिन को रखा गया है। इस अभियान का नाम 'स्वच्छ भारत अभियान' है। http://www.hindikiduniya.com/essay/social-issues-awareness/swachh-bharat-abhiyan/ 'स्वच्छ भारत अभियान' को प्रधानमंत्री ने शुरू करने के साथ ही कुछ नया करने और बड़ी हस्तियों को शामिल करने के उद्देश्य से उन्होंने कला, खेल साहित्य आदि क्षेत्रों के धुरंधरों से इसमें शामिल होने की अपील की और आग्रह किया कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक व्यक्ति को इस अभियान से जोड़ेगा जिससे एक मानव श्रृंखला का निर्माण होगा और देश का प्रत्येक नागरिक इस अभियान से जुड़ जाएगा। इस अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री ने दिल्ली के वाल्मीकि बस्ती में झाड़ू लगा कर की और लोगों से कहा कि वो भी सफाई करते हुए अपना वीडियो सोशल नेटवर्किंग साइट पर शेयर करें जिससे उन्हें देख कर और भी लोग इस अभियान से जुड़े जिससे इसकी सफलता सुनिश्चित हो सके। इसी क्रम में देश की बड़ी हस्तियों जैसे– मुकेश अंबानी, सचिन रमेश तेंदुलकर, अमिताभ बच्चन, आमिर खान आदि ने सफाई करते हुए अपनी वीडियो कुछ समय तक डाली फिर ये सिलसिला आगे बढ़ने लगा।

स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश के गांवों में गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रहे सभी परिवारों को स्वास्थ्य प्रद शौचालय प्रदान करना, बेकार पड़े शौचालय की मरम्मत कराकर स्वास्थ्य–प्रद शौचालयों में बदलना, हैण्डपंप उपलब्ध कराना, सुलभ व सुरक्षित स्नानागार की व्यवस्था, निकास नालियों को ढंकना और नई नालियों का निर्माण, ठोस और द्रव कचरे के निस्तारण की उचित व्यवस्था, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता, घरेलू और पर्यावरण संबंधी सफाई व्यवस्था इत्यादि मुद्दों को शामिल करना है।

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिए। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिये लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिये है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरु किया जा सकता है। ये बेहद जरुरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हो, साथ ही खुले में शौच की प्रवृति को भी खत्म करने की आवश्यकता है। मल ढोने की प्रथा का अंत होना चाहिए। नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना अतिआवश्यक है। खुद के स्वास्थ्य के प्रति लोगों की सोच और स्वाभाव में परिवर्तन लाना और खासकर साफ–सफाई की प्रक्रिया के विषय में जागरूकता फैलाने की अवश्यकता है। पूरे भारत में साफ–सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिये निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर भी बल दिया जाना चाहिए। भारत के हर गांव और शहर में पेड़ों की कटाई पर दंड को और कड़ा किए जाने और अधिकाधिक पेड़ लगाने की आवश्यकता है।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड़ घरों को 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है। सामुदायिक शौचालय के निर्माण की योजना रिहायशी इलाकों में की गई है जहां पर व्यक्तिगत घरेलू शौचालय की उपलब्धता मुश्किल है इसी तरह सार्वजनिक शौचालय की प्राधिकृत स्थानों पर जैसे बस अड्डों, रेलवे स्टेशन, बाजार आदि जगहों पर। इसमें ठोस कचरा प्रबंधन की लागत लगभग 7,366 करोड़ रुपये है, 1828 करोड़ जन सामान्य को जागरुक करने के लिये है, 655 करोड़ रुपये सामुदायिक शौचालयों के लिये, 4165 करोड़ निजी घरेलू शौचालयों के लिए हैं। http://india.gov.in/hi/spotlight

ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ बनाने के लिये 1999 में भारत सरकार द्वारा इससे पहले निर्मल भारत अभियान (जिसको पूर्ण स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है) की स्थापना की गई थी लेकिन अब इसका पुनर्गठन स्वच्छ भारत अभियान(ग्रामीण) के रुप में किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को खुले में शौच करने की मजबूरी से रोकना है, इसके लिये सरकार ने 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिये एक लाख चौतिस हजार करोड़ की राशि खर्च करने की योजना बनाई है। शौचालयों से निकले कचरे को जैविक खाद् और इस्तेमाल करने लायक ऊर्जा में परिवर्तित करने की योजना भी प्रस्तावित है। इसमें ग्राम पंचायत, जिला परिषद, और पंचायत समितियों को शामिल कर उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने की योजना है। http://www.hindikiduniya.com/essay/social-issues-awareness/swachh-bharat-abhiyan/

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के साथ–साथ स्कूलों कालेजों और विश्वविद्यालयों को भी इस कार्यक्रम से जोड़ा गया। इस कार्यक्रम के तहत 25 सितंबर, 2014 से 31 अक्टूबर, 2014 तक केंद्रिय विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में अनेक प्रकार के स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा विद्यार्थियों द्वारा स्वच्छता के विभिन्न पहलूओं पर चर्चा, इससे संबंधित महात्मा गांधी की शिक्षा, स्वच्छता और स्वास्थ्य विज्ञान के विषय पर चर्चा, स्वच्छता क्रिया–कलाप (कक्षा में, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, मैदान, बगीचा, किचन शेड, दुकान, खानपान की जगह इत्यादि)। स्कूल क्षेत्र में सफाई, महान व्यक्तियों के योगदान पर भाषण, निबंध लेखन प्रतियोगिता, कला, फिल्म, चर्चा, चित्रकारी तथा स्वास्थ्य और स्वच्छता पर नाटक मंचन आदि। इसके अलावा सप्ताह में दो बार साफ–सफाई अभियान चलाया जाना जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी, और कर्मचारी सभी हिस्सा लें। साल में देश का प्रत्येक नागरिक कम से कम 100 घंटा इस अभियान के लिए दे। इन योजनाओं और गांधी जी के स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने के उद्देश्य से इस योजना को लाया गया जिसकी वास्तव में जरूरत जान पड़ती है। http://india.gov.in/hi/spotlight

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत व्यक्तिगत शौचालयों के निर्माण, सामुदायिक शौचालय और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत स्तर पर पारस्परिक संवाद, कार्यान्वयन और वितरण तंत्र को मजबूती के साथ–साथ लोगों में व्यावहारिक बदलाव पर जोर दिया गया है और राज्यों को यह छूट दी गई है कि वे वितरण तंत्र को इस तरह से डिजाईन करें कि उसमें स्थानीय संस्कृतियों, प्रथाओं, उनके भावों एवं मांगों का ध्यान रखा गया हो। शौचालय निर्माण के लिए प्रोत्साहन राशि में 2,000 की वृद्धि करते हुए इसे 10,000 से 12,000 कर दिया गया है। ग्राम पंचायतों में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए भी राशि आवंटित की गई है। http://pmindia.gov.in/hi/governmenttrrec/-14-01-2016.

प्रभाव

स्वच्छ भारत अभियान बहुत ही जोर–शोर से शुरू हुआ जिसमें लोगों ने सफाई करते हुए अपना वीडियो सोशल नेटवर्किंग साइट पर शेयर किया। यहां तक कि सांसद और फिल्म अभिनेत्री हेमा मालिनी भी सड़क पर झाड़ू ले के आ गईं। सड़के साफ, नालियां साफ जिधर देखो उधर सफाई। आम आदमी भी आखिर आम आदमी है और नई–नई चीज कुछ दिन तक अच्छी लगती है। यही हाल अब इस योजना का भी जान पड़ता है। अब न कोई बड़ा व्यापारी सफाई करते दिखता है, न कोई खिलाड़ी और न नेता न अभिनेता। फिर भी ज्यादा न सही पर कुछ तो असर आज भी देखने को मिलता है जैसे अब बहुत से लोग कचरा डालने के लिए कचरादान ढूंढते मिल जाते हैं। लोग अब पान खा कर सड़क पर थूकने वालों को टोकने लगे हैं या यूं कहें कि चिंगारी तो लग गई है, पर ये चिंगारी शोला कब बनेगी ये देखने की बात है। फिर

भी अभी इस योजना को चले हुए ज्यादा वक्त तो नहीं हुआ है पर इसका ढीला रवैया पता नहीं पर मन में इसके सफल होने को लेकर शंका पैदा करता है। इस योजना का असर समाज के सबसे महत्वपूर्ण अंग युवा पर सबसे अधिक दिखाई पड़ता है। अब वो स्वच्छता के प्रति अन्य की तुलना में ज्यादा जागरूक दिखाई पड़ता है।

अभी हाल के दुर्गापूजा विसर्जन की बात करें तो पता चलता है कि इस बार देवी की प्रतिमा का विसर्जन हर बार की भांति किसी नदी या तालाब में नहीं बल्कि कृत्रिम तालाब बनाकर हुआ। यह बात भी हमें स्वच्छ भारत अभियान की जागरूकता का भान कराती है। आज लोग रेलगाड़ियों में सफर करते हुए कचरे को यूं ही नहीं गिराते अब कारण कोई भी हो सकता है स्वच्छ भारत अभियान या किसी ने ये करते हुए देख लिया तो हो सकता है कि वो उनकी साख पर ही सवाल न उठा बैठे। तमाम तरह की हिचकिचाहटों के बावजूद भी लोगों ने इसे थोड़ा ही सही पर अपनाया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग अब शौचालय बनवाने पर जोर दे रहे हैं। नालियां जो पहले खुली हुई बजबजाती रहती थी उस पर भी ग्राम प्रधानों की दृष्टि पड़ ही गई है जिससे अभी वो इसी अभियान के तहत साफ हो रही है, कब तक होंगी ये देखने वाली बात होगी। गांवों में जो शौचालय सोख्ते वाले थे उन्हें बदल कर बहने वाले बनाए जा रहे हैं। आजादी के इतने साल बाद भी लोग स्वच्छता को केवल घर में झाड़ू–पोछा लगा लेना ही समझते रहे थे पर इस अभियान ने उन्हें घर से निकाल कर गली की सफाई तक पहुंचा दिया है। अगर देश की प्रत्येक गली साफ हो जाए तो इस अभियान को सफल माना जा सकता है पर शायद अभी भी लोग इसे 'अभी दिल्ली दूर है' की दृष्टि से ही देख रहे हैं।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण:

शोध अध्ययन 'स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओर)' के विशेष संदर्भ में अध्ययन के माध्यम से यह पता करने का प्रयास किया गया है कि क्या स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने के लिए किया जा रहा है? स्वच्छ भारत अभियान में आमजन की भागीदारी किस तरह की है। क्या सरकार इस अभियान के तहत राजनीतिक हित साध रही है? शोध से संबंधित कई प्रश्नों के माध्यम से शोध को मूर्त रूप दिया गया है। इस अध्ययन में विभिन्न शोध पद्धतियों के माध्यम से स्वच्छता अभियान, लोगों में जागरूकता और सरकार की गतिविधियों को परखने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन में स्वच्छता अभियान से संबंधित विभिन्न प्रकार के विषयों को उठाने का प्रयास किया गया है। पर्यावरण संरक्षण जैसी समस्या आज आम होते हुए भी गंभीर समस्या बन गई है। समस्या के समाधान के लिए आज हम किस प्रकार के प्रयास कर रहे हैं और उसमें कितनी सफलता मिल रही है। अध्ययन में इन बिन्दुओं को प्रमुखता से उठाने का प्रयास किया गया है।

प्रश्नावली के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध सेवाग्राम आश्रम के सैलानियों एवं आस–पास के क्षेत्र में रहने वाले प्रतिभागियों पर आधारित है। शोध में 18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की महिला एवं पुरुष प्रतिभागियों को शामिल किया गया है जिनसे विषय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु 100 से अधिक प्रश्नावलियों को भरवाया गया है लेकिन तथ्य विश्लेषण में 100 प्रतिभागियों के मतों की जानकारी को शामिल किया गया है।

प्रश्नावली में कुल 12 प्रश्नों को शामिल किया गया है। प्रश्नावली में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु उपयोग में लाया गया है। प्रश्नावली का अंतिम प्रश्न खुला रखा गया है। जिसमें प्रतिभागियों से विषय से संबंधित विचार एवं सुझाव लिए गए हैं। प्रस्तुत शोध में प्रश्नावली के कुल 12 प्रश्नों में से कुछ उपयोगी तथ्यों का चित्रमय प्रस्तुतीकरण किया गया है। जो इस प्रकार है–

प्रश्न. 1. क्या स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है? 95 प्रतिशत हां में प्राप्त तथ्य यह साबित करते हैं कि सरकार गांधी के सपनों को साकार करने का सशक्त प्रयास कर रही है। नहीं के अन्तर्गत 01 प्रतिशत और पता नहीं के अन्तर्गत 04 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। तथ्य यह भी साबित करते हैं कि सरकार राजनीतिक लाभ के लिए गांधी के विचारों को इस तरह के कार्यक्रमों से जोड़कर लाभ लेने का प्रयास कर रही है।

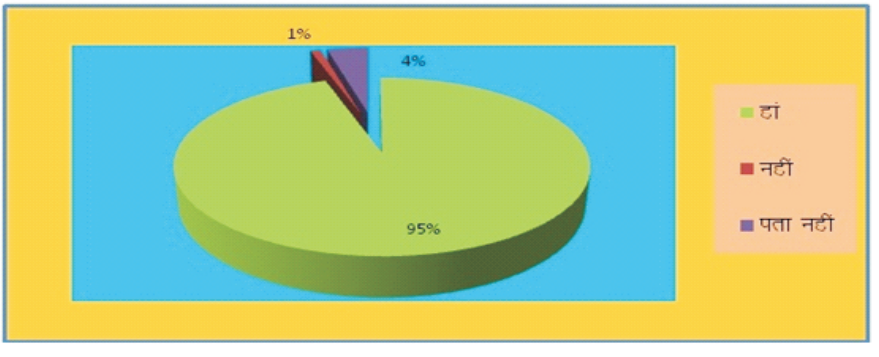

प्रश्न. 2. स्वच्छ भारत अभियान में गांधी को जोड़ने के पीछे सरकार का क्या उद्देश्य है? उक्त प्रश्न के संदर्भ में सरकार विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से करने का प्रयास कर रही है। यहां यह कहना भी गलत नहीं होगा कि इस अभियान के माध्यम से सरकार की मंशा वास्तव में स्वच्छ भारत निर्माण की है। विभिन्न विकल्पों के अन्तर्गत राजनीतिक लाभ 13 प्रतिशत, गांधी के विचारों को अमल करना 27 प्रतिशत, स्वच्छता के प्रति जागरूक करना 34 प्रतिशत, विश्व पटल पर भारत की स्वच्छ छवि का निर्माण 26 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। तथ्य साबि ... है।

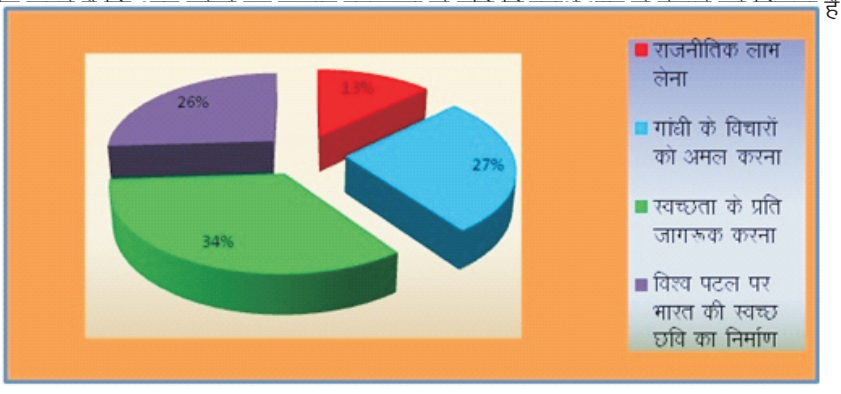

प्रश्न. 3. क्या आपको लगता है कि स्वच्छ भारत अभियान लोगों में जागरूकता लाने में सफल हो रहा है? स्वच्छ भारत अभियान की सफलता हां विकल्प के अन्तर्गत 85 प्रतिशत मतों से साबित होता है कि यह अभियान लोगों को जागरूक करने में सफल हो रहा है। नहीं के अन्तर्गत 07 और पता नहीं के अन्तर्गत 08 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। वास्तव में यह अभियान सरकार के द्वारा चलाई जा रही अन्य योजनाओं के संदर्भ में आम लोगों के द्वारा स्वीकार किया जा रहा है और इस अभियान में लोगों की सहभागिता भी देखने को मिल रही है।

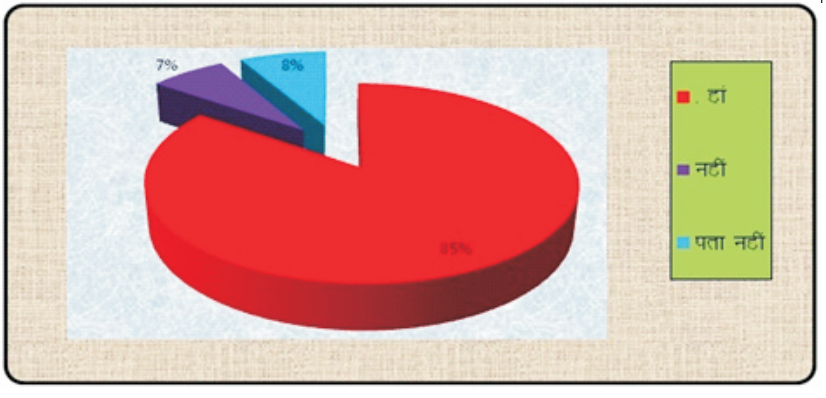

प्रश्न. 4. क्या आप स्वच्छ भारत अभियान से जुड़े हैं? हां के अन्तर्गत 81 प्रतिशत मत इस अभियान की सफलता को साबित करते हैं और नहीं में प्राप्त 19 प्रतिशत मत कुछ हद तक लोगों में इस अभियान के प्रति नकारात्मक दृष्टि भी दर्शाते हैं। यहां पर स्वाभाविक है कि 19 प्रतिशत मत उन प्रतिभागियों का भी हो सकता है जो वर्तमान सरकार के विचारों से सहमत नहीं हैं। चूंकि शोध में तथ्यों का संकलन निदर्शन पद्धति के माध्यम से किया गया है इसलिए इसमें वे लोग भी हो सकते हैं जो सरकार का विपक्ष में बैठकर विरोध कर रहे हैं।

प्रश्न. 5. स्वच्छ भारत अभियान से आप किस प्रकार जुड़े हैं? उक्त प्रश्न के संदर्भ में 85 प्रतिशत मत आसपास के वातावरण को स्वच्छ करने के विकल्प में प्राप्त होते हैं। अन्य विकल्पों में प्रचार–प्रसार के लिए 12 प्रतिशत, राजनीतिक कारणों से 02 प्रतिशत, छवि निर्माण हेतु 01 प्रतिशत, अंतिम विकल्प 'दबाव में' को कोई मत नहीं प्राप्त होता है। यह सच है कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान को लोगों ने आत्मसात करते हुए दिल से अपनाया है। क्योंकि पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व स्तर पर गंभीर समस्या बन चुकी है। इसे आम आदमी भी बखूबी समझ रहा है। शायद इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए आम आदमी इस अभियान में जोर–सोर से अपनी सहभागिता दर्शा रहा है।

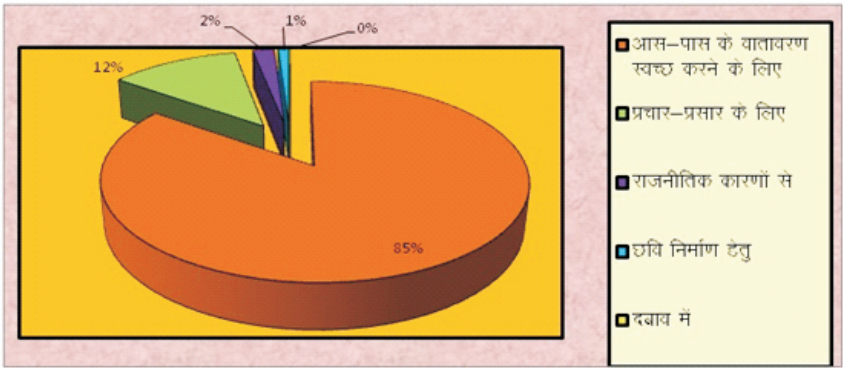

प्रश्न. 6. क्या स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है? 62 प्रतिशत मत इस बात का संकेत देते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध करने की क्षमता बढ़ी है। नहीं के अन्तर्गत 26 प्रतिशत और पता नहीं के अन्तर्गत 12 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। सामान्यतः अब यह देखने को मिलता है कि समाज में ऐसे लोगों की संख्यां बढ़ी है जो पर्यावरण का समर्थन करते हैं। लोग अपने दायित्वों को समझने लगे हैं। आज हम कहीं भी किसी भी प्रकार का कचरा आदि फेंकने में हिचकिचाते हैं। इसके पिछे कहीं न कहीं वह हिम्मत नजर आती है जो लोगों में स्वच्छ भारत अभियान से विकसित हुई है।

प्रश्न. 7. क्या आप स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं? अक्सर यह देखने को मिलता है कि मनुष्य का स्वभाव स्थान विशेष के आधार पर बदल जाता है। यह बदला हुआ व्यवहार स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करने में भी नजर आता है। हां विकल्प के अर्न्तगत प्राप्त 78 प्रतिशत आंकड़े इसकी पुष्टि करते हैं। नहीं के अन्तर्गत 20 प्रतिशत और पता नहीं के अन्तर्गत 02 प्रतिशत आंकड़े प्राप्त होते हैं।

प्रश्न. 8. क्या स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है? डिटॉल का विज्ञापन अपने संदेश में स्वच्छता और बीमारी के संदर्भ को दर्शाता है। विज्ञापन संदेश देता है कि स्वच्छ रहने के लिए डिटॉल से हांथ धोएं और कुछ हद तक ये सत्य भी है। स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारी में तेजी से कमी आई है। शोध में प्राप्त 70 प्रतिशत आंकड़े यह साबित करते हैं जबकि नहीं के अन्तर्गत 30 प्रतिशत आंकड़े प्राप्त होते हैं।

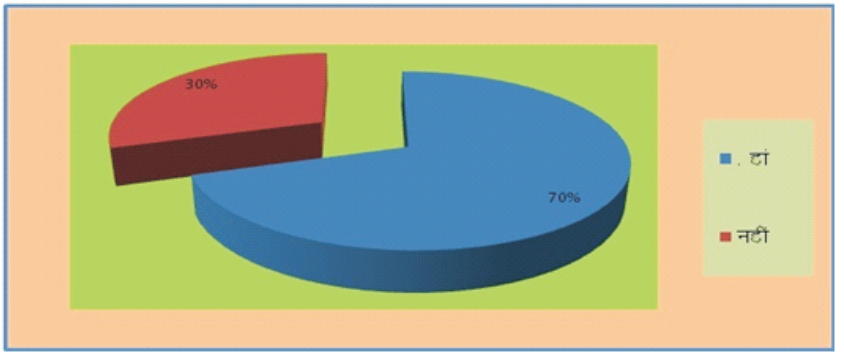

प्रश्न. 9. स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ा रहा है? हां के अन्तर्गत प्राप्त 88 प्रतिशत आंकड़े स्वच्छ भारत अभियान की सफलता को साबित करते हैं। आंकड़े दर्शाते हैं कि इस अभियान के बाद लोगों में स्वच्छता को लेकर जागरूकता बढ़ी है। नहीं के अन्तर्गत प्राप्त 12 प्रतिशत आंकड़े कुछ खास महत्व नहीं रखते हैं। भारतीय समाज में यह हमेशा से देखने को मिलता है कि आम लोग भीड़ की तरफ आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। इस बात को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी बेहतर तरीके से समझते हैं। इसी कारण उन्होंने इस अभियान को आम लोगों के बीच स्वच्छता अभियान को सम्मान और अभिमान से जोड़ कर प्रस्तुत किया। आज आम आदमी इस अभियान से खुद को जोड़कर सफाई करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

प्रश्न. 10. आप स्वच्छता अभियान में एक महीनें में कितना समय देते हैं? एक महीने में सफाई अभियान को एक से तीन घंटा देने वाले प्रतिभागियों का 68 प्रतिशत मत प्राप्त होता है अन्य विकल्पों के अन्तर्गत 3 से 6 घंटा 18 प्रतिशत 6 से 9 घंटा 0 प्रतिशत और 9 घंटा से अधिक 14 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। प्रतिभागियों के इन मतों से इस योजना के उद्वेश्यों की पूर्ति दूर–दूर तक दिखाई नहीं देती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इस योजना को लेकर खास रूचि दिखाई जा रही है। यह कह सकते हैं कि यह योजना मोदीजी के सपनों की योजना है। भारत को स्वच्छ करने की योजना और स्वच्छ देखने की योजना की पहल मोदीजी ने की है। इसी संदर्भ में मोदीजी ने आम नागरिकों से अपील की है कि वे कम से कम एक वर्ष में इस अभियान में देश को स्वच्छ रखने के लिए कम से कम सौ घंटे अवश्य दें। शोध में प्राप्त तथ्य कुछ दुखद जरूर है लेकिन निराशापूर्ण नहीं। पहले से शोध के तथ्यों के निष्कर्ष के आधार पर लगभग पचास घंटे प्रतिवर्ष इस स्वच्छता अभियान से लोग जुड़े नजर आते हैं। 50 प्रतिशत भागीदारी भी निराशा को आशा में बदल सकती है। यह कहना भी यहां पर गलत नहीं होगा कि स्वच्छ भारत अभियान ने वास्तव में देश को स्वच्छ करने हेतु एक कदम उठाया है। जिसका देश के आम नागरिकों ने प्रसन्नता

के साथ स्वागत किया।

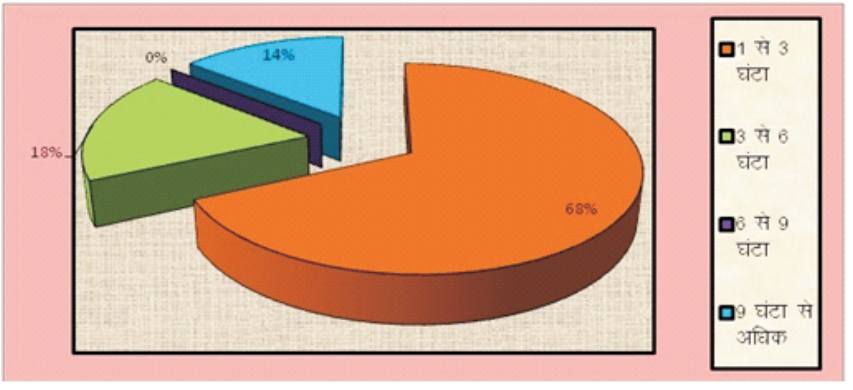

प्रश्न. 11. स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों (अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, मुकेश अंबानी इत्यादि) इस अभियान की खासियत इस संदर्भ में और अलग नजर आती है कि इससे अनेक ऐसी जानी–मानी हस्तियां जुड़ी और सिर्फ जुड़ी ही नहीं जमीनी धरातल पर आकर उन्होंने इस अभियान को अपनाते हुए आगे बढ़ाया। उदाहरण के रूप में जब किक्रेट प्रेमियों ने अपने हीरों के हांथ में बैट की जगह सफाई करने के यंत्र खुरपी, झाड़ू देखे तो वे खुद को इस अभियान से दूर नहीं रख पाएं। सचिन ही नहीं ऐसे कई नायक इस अभियान से जुड़े और इसे आगे बढ़ाया। हां के अन्तर्गत प्राप्त 73 प्रतिशत आंकड़े यह साबित करते हैं जबकि 27 प्रतिशत लोगों का मानना है कि इस अभियान से जानी–मानी हस्तियों के जुड़ने से कोई लाभ नहीं हुआ है।

प्रश्न. 12. स्वच्छ भारत अभियान पर अपने विचार दें? उक्त संदर्भ में प्रतिभागियों ने पर्यावरण के संबंध में अलग–अलग तरह से विचार प्रस्तुत किए। कुछ प्रतिभागियों ने सरकार द्वारा इस योजना के माध्यम से लाभ लेने का आधार बताया वहीं कुछ प्रतिभागी सरकार के इस प्रयास की सराहना करते नजर आए। खास तौर से उम्रदराज पीढ़ी के लोगों ने इस अभियान को बेहतर समर्थन दिया उनका मानना था कि सरकार ने भविष्य को देखते हुए और विश्व स्तर पर भारत की छवि निर्माण को देखते हुए इस अभियान को बेहतर बताया। उनके मन में पर्यावरण संरक्षण को लेकर काफी चिंताएं थी। उन्होंने युवा पीढ़ी को पर्यावरण के प्रति सजग रहने की बात को भी उठाया। उनका कहना था कि भविष्य के बेहतर और सुरक्षित निर्माण के लिए पर्यावरण संरक्षण बहुत ही आवश्यक है।

सरकार के द्वारा उठाए गए कदम को महिला प्रतिभायिगों ने सफल बताया। इस अभियान में महिला प्रतिभागियों की संख्या पुरूष प्रतिभागियों से कम देखने को नहीं मिलती है। विचारों के निष्कर्ष के रूप में देखते हैं तो हम पाते हैं कि इस अभियान को समाज के हर वर्ग से महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है या यह कह सकते हैं कि यह ऐसी पहली सरकार की योजना है जिसे सामाजिक परिवर्तन के रूप में देखा जा रहा है। इस योजना पर पिछली योजनाओं की तरह राजनीतिक ठप्पा नहीं लगा। सरकार इस योजना के माध्यम से शायद देश को स्वच्छ करने में सफल हो रही है। इस सफलता में महत्वपूर्ण भागीदारी तकनीक की भी नजर आती है। तकनीक ने इस योजना को भारत के सम्मान के साथ जोड़ा और इससे लोग भी जुड़े। यही कारण है कि इस योजना को सफल करने और आगे बढ़ाने में फेसबुक, वाट्सअप जैसे नवीन संचार माध्यमों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता।

निष्कर्ष:

शोध अध्ययन के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष दिए जा सकते हैं–

- स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से सरकार गांधी के सपनों को पूरा करने का प्रयास कर रही है। 95 प्रतिशत आंकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं।
- 85 प्रतिशत तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह अभियान अपने उद्देश्यों में सफल हो रहा है।
- स्वच्छ भारत अभियान से आम नागरिकों के जुड़े होने के संदर्भ में 81 प्रतिशत मत पक्ष में प्राप्त होते हैं। इससे यह साबित होता है कि स्वच्छ भारत अभियान की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है।
- इस अभियान के बाद आम आदमी में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध प्रकट करने की क्षमता विकसित हुई है। इससे यह भी जाहिर होता है कि आम आदमी स्वच्छता के प्रति सजग हो रहा है। साथ ही वह अपने आसपास के क्षेत्रों को स्वच्छ रखना चाहता है।
- स्वच्छता के प्रति पूर्व विकसित हमारी धारणएं आज भी देखने को मिलती है। 78 प्रतिशत आंकड़े इस बात को साबित करते हैं कि हम स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं। उदाहरण स्वरूप एयरपोर्ट, मैट्रो रेलवे स्टेशन व बस स्टैंड में से हम बस स्टैंड पर बिना किसी हिचकिचाहट के गंदगी फैलाने से नहीं चूकते हैं। जबकि अन्य स्थानों पर ऐसा करना संभव नहीं है।
- यह अभियान इस मायने में सफल हो रहा है कि इसके आरंभ से ही इसमें जुड़ने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।
- स्वच्छता अभियान में 1 महीने में अधिकतम 1 से 3 घंटा विकल्प के अंतर्गत 68 प्रतिशत लोग सहमति देते हैं। विश्लेषण के उपरांत यह तथ्य लगभग 40 घंटे प्रतिवर्ष है। मोदी जी के इस अभियान के उद्देश्य को लेकर प्रतिवर्ष 100 घंटे का कार्य सुनियोजित किया गया है। प्राप्त तथ्य मोदी जी के सपनों को साकार नहीं करते हैं।
- 70 प्रतिशत लोगों का यह भी मानना है कि इस अभियान के बाद से गंदगी में होने वाली बीमारियों में कमी देखने को मिली है। अतः इस अभियान को शहरों से निकालकर ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रभावी बनाने के सशक्त प्रयास किए जाने चाहिए। जिससे भारत का ग्रामीण परिवेश भी स्वच्छ और सुन्दर बन सके।

- इस अभियान से जानी–मानी हस्तियों के जुड़ने से काफी लाभ हुआ है। क्योंकि रोल मॉडल के रूप में स्थापित ये हस्तियां बड़े समूह का प्रतिनिधित्व करती हैं और अपने कार्य एवं व्यवहार से अपने फालोअर्स को भी ऐसे अभियानों में आसानी से शामिल कर लेते हैं।

सुझावः

शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव इस प्रकार हैं–

- गांधीजी के माध्यम से सरकार राजनीतिक लाभ लेने का प्रयास कर रही है। अतः ऐसी जनयोजनाओं में जहां आम आदमी की अधिकाधिक भागीदारी हो उसमें व्यक्ति विशेष की छवि का उपयोग नहीं करना चाहिए।
- यह अभियान लोगों में जागरूकता लाने में सफल हो रहा है। अतः सरकार को सजगता के साथ इसे आगे बढ़ाना चाहिए।
- शोध में शामिल लगभग 80 प्रतिशत प्रतिभागी इस अभियान से जुड़े हुए पाए गए। सरकार को इस अभियान की नीति और उद्देश्यों पर पुनः विचार करते हुए बचे हुए लोगों को भी इसमें जोड़ने का प्रयास करना चाहिए।
- स्वच्छता के लिए बनाए गए नियमों का पालन गंभीरता से हो सके इसके लिए आवश्यक है कि वर्तमान नियमों को और अधिक कड़ा किया जाएं।
- स्वच्छता अभियान को शहरों से निकालर ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रभावी बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। जिससे भारत का ग्रामीण परिवेश भी स्वच्छ बन सके।
- स्वच्छता अभियान में नागरिकों की भागीदारी पहले की अपेक्षा बढ़ी है। अतः आवश्यक है कि सरकार को ऐसे प्रावधान करने चाहिए जिससे यह भागीदारी और गति पकड़ सके।
- समाज के हीरो जो इन अभियानों से जुड़े हैं उन्होंने अपने प्रशंसकों से इन अभियानों को आगे बढ़ाने के लिए अपील भी की है। सरकार को ऐसे लोगों को किसी न किसी रूप में प्रोत्साहित करना चाहिए।

शोध की उपयोगिता एवं भविष्य में शोधः

शोध अध्ययन 'स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओर)' के माध्यम से वर्तमान समय में स्वच्छ भारत अभियान की स्थिति और भविष्य को दर्शाता है। शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान समय में स्वच्छता अभियान से समाज में किस प्रकार के परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं? क्या स्वच्छता अभियान से देश स्वच्छ हो रहा है? या इसका उपयोग राजनीतिक हित के लिए किया जा रहा है। इन सभी बिंदुओं को शोध के माध्यम से रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

आज स्वच्छता अभियान की लोकप्रियता कुछ हदतक बढ़ी है। शोध की उपयोगिता को देखें तो यह शोध स्वच्छता अभियान के विस्तार के साथ–साथ लोगों में जागरूकता और सरकार की पहल को आगे बढ़ाने में मदद करेगा। स्वच्छता अभियान में देश के बड़ी हस्तियों के जुड़ने से इसकी विश्वसनीयता और भी बढ़ी है। भविष्य में यह शोध स्वच्छता अभियान के दृष्किोण को समझने और सरकार की रणनीति के साथ–साथ लोगों में स्वच्छता के प्रति बढ़ रही जागरूकता को समझने में मददगार साबित होगा।

सहायक संदर्भ सूचीः

- चॉमस्की नोम, जनमाध्यमों का मायालोक, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
- व्यास हरिप्रसाद, संग्राहक, ग्राम स्वराज्य, प्रकाशक–
- Issar Devendra,'Communication Mass Media and Development', Unique Publication, Delhi.
- Kumar Keval J, 'Mass Communication in India', Jaico Publishing House, India.
- Joshi P.C., Communication and National Development, Anamika Publishers & Distributors (P) Ltd., 2002, New Delhi 110002, India.
- Day Louis Alvin, Media Communication Ethics, 2006, Cengage Learning India Private Limited, Delhi 100092, India.
- Das Arpana Dhar, Modern Environmental Ethics : A Critical Survey
- Potter, W James, Media Literacy, 2011, Sage publication, New Delhi.
- R Rajeevan, Towards A Humane Environment Responsibilities of State, Role of Civil Society & Rights of Citizens, Gyan Books Pvt. Ltd. (Delhi, India).
- Rangarajan Mahesh, Madhusudan M.D., Shahabuddin Ghazala, Nature Without Borders (Edited) Orient Blackswan Pvt. Ltd., 1/14, Asaf Ali Road, New Delhi-110002.
- B. Verma, Environmntal Pollution: An Introduction, Kunal Books Publishers
- Dash Dhanalaxmi, Satapathy Mahendra K., People Who Make a Change (Men and Women in Environmental Movements)

पत्रिका संदर्भः

- Media Mimansa, Publisher- MCNMC University, Bhopal, Madhya Pradesh.

- Communication Today, Publisher- Prof. Dr. Sanjeev Bhanawat, Jaipur, Rajshthan..
- Journal of Pollution Effects & Control, OMICS Publishing Group, Westlake, Los Angeles.

रिपोर्ट:

- Health events in the 2015 UN climate change conference of parties (COP21- 30 Nov- 2015), held in Paris.
- UNESCO Global Study On Media Violence.
- Climate change 2014: impacts, adaptation, and vulnerability-WHO
- NEERI, 1986, A Manual of Water and Waste Water Analysis. National Environmental Engineering
- Research Institute, Neharu marg, Nagpur (MS), Central India.
- Bobdey A. D., P.G.Puranik, A.M.Bhate and A.P.Sawane, 2007, Evaluation of Pollution Stress
- on River Wainganga, Dist. Bhadara. DAE-BRNS Symp. NSL- 2007, Udaipur, India. 380-382.

बेवसाइट संदर्भ:

1.http://www.epa.ie/&panel1-1
2.https://en.wikipedia.org/wiki/Swachh_Bharat_Abhiyan
3.http://cipet.gov.in/swachh.html#ad-image-22
4.http://pmindia.gov.in/en/government_tr_rec/swachh-bharat-abhiyan-2/
5.http://india.gov.in/spotlight/swachh-bharat-abhiyaan-ek-kadam-swachhata-ki-ore
6.http://www.who.int/topics/environmental_pollution/en/
7.http://nmcnagpur.gov.in/
8.http://www.imd.gov.in/
9.http://www.livescience.com
10.www.wikipedia.org/wiki/social/impact
11.http://www.indiaenvironmentportal.org.in/category/10430/thesaurus/nasa/
12.http://www.environmentmagazine.org
13.http://www.nasa.gov
14.http://www.publishingindia.com/
15.http://www.hindikiduniya.com/

फोटो संदर्भ:

1-https://www.google.co.in/imgres?imgurl=http://media2.intoday.in/indiatoday/images/stories/swachch_650_011015021122.jpg&imgrefurl=http://indiatoday.intoday.in/section/309/1/swachhbharatabhiyan.html&h=488&w=650&tbnid=FTb3Nhx_ejWFSM:&docid=Zn8hFQAJZDoiWM&hl=en&ei=fz55VoiPE5SSuASNo2ABw&tbm=isch&ved.
2-https://www.google.co.in/imgres?imgurl=http://images.indianexpress.com/2015/10/modiswachhbharatl.jpg&imgrefurl=http://indianexpress.com/article/explained/oneyearofswachhbharatanditsbeennocleansweep/&h=422&w=759&tbnid=NOfBGHcNR5XEZM:&docid=od93SeRN4mLRuM&hl=en&ei=fz55VoiPE5SSuASNoo2ABw&tbm=isch&ved=0ahUKEwjI.
3-https://www.google.co.in/imgres?imgurl=https://i.ytimg.com/vi/fkcQgkDW4oo/maxresdefault.jpg&imgrefurl=https://www.youtube.com/watch?v%3DfkcQgkDW4oo&h=720&w=1280&tbnid=1h4ghj36tA9bM:&docid=0_5QhZFadlVldM&hl=en&ei=E0F5VrqpCcS0uAT8y6WYAw&tbm=isch&ved=0ahUKEwj6_tmJu-_JAhVEGo4KHfxlCTMQMwgjKAgwCa
4-https://www.google.co.in/imgres?imgurl=http://images.midday.com/images/2014/dec/SwachhBharat3.jpg&imgrefurl=http://www.midday.com/articles/govtofficialssulkasswachhbharatsweepsawaylongweekendplans/15653193&h=394&w=650&tbnid=3b5ufYjvG3shVM:&docid=r2EKkQvh0cV1

M&hl=en&ei=QUB5Vq7vMouruQTVgb6wCg&tbm=isch&ved.
5-https://www.google.co.in/imgres?imgurl=http://www.ihmchennai.org/ihmchennai/index.php/photo-gallery/13-swachh-bharat-abhiyan/detail/160swacabhiyan%253Ftmpl%253 Dcomponent%2526phocadownload%253D2&imgrefurl=http://www.ihmchennai.org/ihmchennai/index.php/photogallery/category/13swachhbharatabhiyan&h=620&w=877&tbnid=ejh7iwqSQ4FJoM:&docid=I4xQa1M3iAip2M&ei=WV95VqmnAcqVuASJhI_QBg&tbm=isch&ved=0ahUKEwjpt5D51JAhXKCo4.
6-https://www.google.co.in/search?q=swachh+bharat+abhiyan&espv=2&biw=1366&bih=667&site=webhp&source=lnms&tbm=isch&sa=X&sqi=2&ved=0ahUKEwje56nN1_JAhVVCY4KHVLWBWEQ_AUIBigB#tbm=isch&tbs=rimg%3ACRscTgUipgRIjg62bMNan46nWhHh2AilfXb8jc5yWKzHDh6HimtBPCntj9zSDIczelO0jMbsWdL3rVYhm0n4BpHCoSCTrZsw1qfjqdESGlEPvq9IdDKhIJaEeHYCKV9dsROUqVuHzKA0qEgnyNznJYrMf4BH5TF7utEbtoioSCeHoeKa0E8KeEQyCd3KN4A6OKhIJ2P3NIMhzN6URRZ1FJkBdHb0.
7-https://www.google.co.in/imgres?imgurl=http://www.fridaygurgaon.com/arap_media_cms/newsimages/image/1420%252520Nov,2014/social5.jpg&imgrefurl=http://www.fridaygurgaon.com/news/5602swachhbharatabhiyan.html&h=396&w=375&tbnid=PP7Pj2OIdznmwM:&docid=d-fStIl48bfcnM&ei=BGt5VuKgAYugugSAp4SoCQ&tbm=isch&ved.
8-shttps://www.google.co.in/imgres?imgurl=http://s2.firstpost.in/wpcontent/uploads/2014/10/SwachBharat.jpg&imgrefurl=http://www.firstpost.com/politics/cleansweephowmodistumpedaapcongwithswacchbharatcampaign1740849.html&h=285&w=380&tbnid=zLUoMFVSDsSEM:&docid=SNrAeFhejiBf3M&ei=b2p5VrTUHM2UuATv0bzQDQ&tbm=isch&ved.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org